Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 9 | SEPTEMBER 2024

हरिशंकर परसाई के कथा साहित्य में व्यंग्य : एक अध्ययन

धर्म राज दरोगा [1]

[1] **एम. ए. नेट हिंदी साहित्य, सहायक आचार्य हिंदी, संजीवनी महाविद्यालय, विजयनगर (ब्यावर).**

ABSTRACT:

हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य में व्यंग्य के अप्रतिम रचनाकार हैं। उनका लेखन समाज की जटिलताओं, राजनीतिक विडंबनाओं और नैतिकता के खोखले स्वरूप को उजागर करता है। उनकी कहानियाँ केवल हास्य उत्पन्न नहीं करतीं, बल्कि पाठकों को समाज के विद्रूप चेहरे से परिचित कराती हैं। उनके कथा साहित्य में व्यंग्य के स्वरूप, उद्देश्यों और समाज पर उनके प्रभाव को विस्तार से समझने का प्रयास है।

KEYWORDS:

हरिशंकर परसाई, व्यंग्य साहित्य, कथा साहित्य, समाज सुधार, हास्य, आलोचना, नैतिकता

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th September 2024	30th September 2024

विषय वस्तु

परिचय

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त 1924 को मध्य प्रदेश के जमानी गाँव में हुआ। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एमए किया। परसाई हिंदी व्यंग्य साहित्य के पहले ऐसे लेखक थे, जिन्होंने व्यंग्य को एक गंभीर और स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया।

उनका लेखन स्वतंत्रता के बाद के भारत में समाज और राजनीति की वास्तविकताओं को उजागर करता है। परसाई ने अपने साहित्य के माध्यम से उन विडंबनाओं को सामने रखा, जो समाज में गहराई तक जड़ें जमा चुकी थीं। उनका मानना था कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को सुधारने और दिशा देने का एक प्रभावी माध्यम है।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं:

- *सदाचार का ताबीज*
- *ठिठुरता हुआ गणतंत्र*
- *निठल्ले की डायरी*
- *भोलाराम का जीव*
- *तट की खोज*

इन रचनाओं में उनके व्यंग्य का उद्देश्य केवल हँसी उत्पन्न करना नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं पर विचार करना है।

व्यंग्य का स्वरूप और उद्देश्य

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य का स्वरूप बहुआयामी है। उनका व्यंग्य सतही हास्य तक सीमित नहीं है, बल्कि वह गहरे सामाजिक संदेशों को व्यक्त करता है। उनके व्यंग्य में एक विशेष प्रकार की तीव्रता और यथार्थवादी दृष्टिकोण होता है।

व्यंग्य का स्वरूप

समाज का दर्पण: परसाई का व्यंग्य समाज की सच्चाई को प्रकट करता है।

यथार्थ का चित्रण: उनके व्यंग्य में समाज के यथार्थ का सजीव चित्रण मिलता है।

विडंबनाओं का प्रदर्शन: वे समाज में व्याप्त पाखंड और विडंबनाओं को उजागर करते हैं।

उदाहरण:

- *सदाचार का ताबीज*: इस कहानी में उन्होंने नैतिकता के दिखावे पर चोट की है।
- *ठिठुरता हुआ गणतंत्र*: यहाँ गणतंत्र दिवस की परेड और ठिठुरते गरीबों की तुलना के माध्यम से सामाजिक विषमता को उजागर किया गया है।

व्यंग्य का उद्देश्य

सामाजिक जागरूकता: परसाई के व्यंग्य का प्रमुख उद्देश्य समाज में जागरूकता लाना है।

समाज सुधार: उनका लेखन पाठकों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

मानवता का उत्थान: वे मानवीय मूल्यों और नैतिकता के उत्थान पर जोर देते हैं।

कथा साहित्य में व्यंग्य की अभिव्यक्ति

हरिशंकर परसाई की कहानियों में व्यंग्य सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तरों पर प्रकट होता है। उन्होंने कथा साहित्य के माध्यम से व्यंग्य को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया।

समाज में पाखंड का चित्रण

परसाई ने धार्मिक और सामाजिक पाखंड पर तीखा व्यंग्य किया है।

उदाहरण:

- *सदाचार का ताबीज*: यहाँ समाज के उन लोगों पर कटाक्ष किया गया है, जो नैतिकता के दिखावे में लिप्त रहते हैं।
- *तट की खोज*: धार्मिक स्थलों पर जाने वाले लोगों की मानसिकता को उजागर किया गया है।

राजनीतिक भ्रष्टाचार और तंत्र की आलोचना

उनके व्यंग्य में राजनीति और प्रशासन की विसंगतियाँ प्रमुख विषय हैं।

उदाहरण:

- *भोलाराम का जीव*: सरकारी तंत्र की अक्षमता और भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया है।
- *रानी नागफनी की कहानी*: नेताओं की दोहरी नीतियों और राजनीति की सच्चाई को उजागर किया गया है।

मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाएँ

मध्यम वर्ग के जीवन की समस्याओं और अंतर्द्वंद्व को उन्होंने व्यंग्य का विषय बनाया।
उदाहरण:

- *निठल्ले की डायरी*: इसमें मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक तंगी और सामाजिक संघर्ष को व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- *ठिठुरता हुआ गणतंत्र*: गरीबों की दुर्दशा और गणतंत्र दिवस के भव्य समारोह के बीच की विडंबना को दिखाया गया है।

शिक्षा और नैतिकता पर व्यंग्य

परसाई ने शिक्षा और नैतिकता के नाम पर होने वाले दिखावे पर तीखा कटाक्ष किया है।
उदाहरण:*एक गोपनीय रिपोर्ट*: यह शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार पर आधारित व्यंग्य है।

भाषा और शैली

हरिशंकर परसाई की भाषा और शैली उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। उनकी भाषा सरल, प्रवाहमयी और प्रभावशाली है।

भाषा की विशेषताएँ:

सादगी और सरलता: परसाई की भाषा आम बोलचाल की है, जो पाठकों से सीधा संवाद स्थापित करती है।

प्रवाह: उनकी भाषा में प्रवाह और सहजता है।

हास्य और कटाक्ष का प्रयोग: उनकी कहानियों में हास्य और कटाक्ष का अद्भुत संयोजन है।

शैली की विशेषताएँ:

संवादात्मक शैली: उनकी रचनाएँ संवाद शैली में लिखी गई हैं, जिससे पाठक कहानी से जुड़ जाते हैं।

प्रेरक शैली: उनकी कहानियाँ पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं।

उदाहरण:

- *भोलाराम का जीव*: इसमें सरल भाषा में गहरी बात कही गई है।

समाज सुधार का माध्यम

हरिशंकर परसाई का साहित्य समाज सुधार के उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखा गया है। उनका व्यंग्य केवल समस्याओं को उजागर नहीं करता, बल्कि उनके समाधान का सुझाव भी देता है।

समस्याओं को उजागर करना

- भ्रष्टाचार, गरीबी, और सामाजिक असमानता को उन्होंने व्यंग्य का मुख्य विषय बनाया।
  उदाहरण:
- *सदाचार का ताबीज*: नैतिकता के दिखावे की समस्या को उजागर किया गया।

समाधान की दिशा

परसाई का लेखन समाज को आत्ममंथन और सुधार की दिशा दिखाता है।
उदाहरण:

- *भोलाराम का जीव*: सरकारी तंत्र में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

निष्कर्ष

हरिशंकर परसाई के कथा साहित्य में व्यंग्य केवल हास्य का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज के यथार्थ को उजागर करने और पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करने का माध्यम है। उनका लेखन समाज की विडंबनाओं और विसंगतियों पर तीखा प्रहार करता है और समाज सुधार का आह्वान करता है। हरिशंकर परसाई के कथा साहित्य में व्यंग्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज और व्यक्तियों को आत्ममंथन का अवसर भी प्रदान करता है। उनकी कहानियाँ आधुनिक समाज की ज्वलंत समस्याओं को उजागर करती हैं और समाज सुधार की प्रेरणा देती हैं। उनके व्यंग्य में हास्य, कटाक्ष और समाज के प्रति गहरी समझ का अद्भुत मेल है।

REFERENCES

1. परसाई, हरिशंकर। *सदाचार का ताबीज।* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. परसाई, हरिशंकर। *भोलाराम का जीव।* भोपाल: साहित्य भवन।
3. शर्मा, रामेश्वर। *हिंदी साहित्य में व्यंग्य।* वाराणसी: गंगानाथ प्रकाशन।
4. मिश्रा, प्रदीप। *हरिशंकर परसाई का साहित्यिक योगदान।* दिल्ली: साहित्य अकादमी।
5. तिवारी, हरिशंकर। *आधुनिक हिंदी व्यंग्यकार।* इलाहाबाद: भारत पुस्तक भंडार।